अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : चतुर्थ - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) मन, वचन, काया की प्रवृत्ति को कहते हैं-

(क) समिति (ख) गुप्ति

(ग) भाषा समिति (घ) मन गुप्ति ( )

(b) सूक्ष्म पृथ्वीकाय की आगति है-

(क) 74 (ख) 49

(ग) 243 (घ) 179 ( )

(c) श्री पन्नवण सूत्र पद-6 में वर्णन है -

(क) समिति गुप्ति (ख) ज्ञान-लब्धि

(ग) छोटी गतागत (घ) लघुदण्डक ( )

(d) बाटा बहती अवस्था में गुणस्थान मिलता है ?

(क) 1,3,4 (ख) 1,5,6

(ग) 1,7,8 (घ) 1,2,4 ( )

(e) भावदेव की आगति है-

(क) 111 (ख) 112

(ग) 198 (घ) 284 ( )

(f) समवायांग सूत्र के 27वें समवाय में वर्णित है-

(क) साधुजी के 27 गुण (ख) आचार्य के 36 गुण

(ग) सिद्ध के 8 गुण (घ) अरिहंत के 12 गुण ( )

(g) शंकितादि 10 दोष का वर्णन है-

(क) गवेषणैषणा में (ख) ग्रहणैषणा में

(ग) परिभोगेषणा में (घ) भाषा समिति में ( )

(h) निर्बल से सबल जबरदस्ती छीन कर देवे तो दोष है-

(क)अभिहड़े (ख) मालोहड़े

(ग) अच्छिज्जे (घ) अज्झोयरए ( )

(i) इनके लद्धिया में 3 ज्ञान की भजना होती है-

(क)ज्ञान लब्धि (ख) चारित्र लब्धि

(ग) दर्शन लब्धि (घ) चारित्राचारित्र लब्धि ( )

(j) देवियों में जीव के भेद होते हैं-

(क)2 (ख) 4

(ग) 1 (घ) 14 ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) 'आलम्बन' ईर्या समिति का कारण है। ( )

(b) बादर वनस्पतिकाय की आगति 74 की है। ( )

(c) मिथ्यादृष्टि जीव 12 देवलोक तक जा सकते हैं। ( )

(d) समूर्च्छिम मनुष्य अपर्याप्त ही होते हैं। ( )

(e) भावदेव के देवायु का उदय होता है। ( )

(f) भव्य द्रव्य देव के मनुष्यायु का ही उदय होता है। ( )

(g) समुच्चय जीव में 3 अज्ञान की नियमा होती है। ( )

(h) 'काय गुप्ति' काल से जीवन पर्यन्त होती है। ( )

(i) दान लब्धि में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना होती है। ( )

(j) जीवन रहित करने की क्रिया करना 'समारंभ' है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (20)**

(a) मेरा वर्णन उत्तराध्ययन सूत्र के 24वें अध्ययन में है। .....

(b) मेरे लद्धिया और अलद्धिया दोनों में चार ज्ञान की भजना होती है। .....

(c) मुझमें पन्द्रह में से एक ही योग होता है। .....

(d) मैं अगले भव में देवगति में ही उत्पन्न होता हूँ। .....

(e) मुझमें अपर्याप्त व अनाहारक दोनों अवस्था मिलती है। .....

(f) मेरे अपर्याप्त में अवधि ज्ञान नहीं होता है। .....

(g) मैं 35 वाणी के गुणों से युक्त होता हूँ। .....

(h) मैं अवधिज्ञान का चौथा भेद हूँ। .....

(i) मेरा अन्तर जघन्य एक सागर झाझेरा है। .....

(j) मेरे भवस्थ और सिद्ध ये दो भेद होते हैं। .....

प्र.4 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। **14x2 = (28)**

(a) **समिति को परिभाषित कीजिए।**

.....

.....

(b) **माया में एकाग्रता का उदाहरण दीजिए।**

.....

.....

(c) **छोटी गतागत के आधार पर युगलिक के 5 भेद लिखिए।**

.....

.....

(d) **5 देव के थोकड़ों का अल्पबहुत्व द्वार लिखिए।**

.....

.....

(e) **धर्मदेव का जघन्य संचिट्ठणकाल किस अपेक्षा से कहा है?**

.....

.....

(f) **गवेषणैषणा व परिभोगैषणा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

(g) **'जोगे दोष' का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

(h) **'अपमाणं' का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

(i) **ज्ञान लब्धि के थोकड़ों के द्वारों की पहली गाथा लिखिए।**

.....

.....

(j) **मनःपर्यव ज्ञान की स्थिति लिखिए।**

.....

.....

(k) **9वें देवलोक की आगति-गति लिखिए।**

.....

.....

(l) **नरदेव व धर्मदेव की अवगाहना लिखिए।**

.....

.....

(m) **नारकी के अपर्याप्ता में सास्वादन नहीं मानने का आधार लिखिए।**

.....

.....

(n) **सन्नी के पर्याप्त में कार्मण काययोग मानने का कारण लिखिए।**

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) **तिर्यंच पंचेन्द्रिय की आगति व गति लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **भव्य द्रव्य देव की स्थिति कितनी है ? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(c) **पाँच देवों का थोकड़ा किस आगम से है ? उसके द्वारों के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **नरक गति के अपर्याप्त आहारक में कौन-कौनसे जीव के भेद तथा योग होते हैं ?**

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **चारों गति के अपर्याप्त आहारक व अनाहारक में गुणस्थान, योग, उपयोग व लेश्या की संख्या लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **ईर्या समिति के चौथे कारण को स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **नारकी व देवता में 3 अज्ञान की भजना का कारण स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **अच्छिज्जे, अणिसिट्ठे, मालोहडे में अन्तर स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(i) **नारकी देवता के अपर्याप्ता में ज्ञान-अज्ञान की नियमा-भजना लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(j) **उद्‌गम के 16 दोष की गाथा लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(k) **ज्ञान लब्धि का उपयोग द्वार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(l) **आहार छोड़ने के 6 कारण लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(m) **श्रुतज्ञान के 14 भेदों के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(n) **10 प्रकार की स्थंडिल भूमि के अंतिम 5 प्रकार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....